मनजरग (3-10) [म्नौ ज्रौ गः पुरविरतिः प्रहर्षिणी स्यात् Jk. 2. 150] प्रहर्षिणी, मयूरपिच्छ.

मभभभग (4-9) [मोहप्रलापः श्रुतिभिर्ग्रहैर्भिन्नो मभत्रिगाः Mm. 1. 60. 2] मोहप्रलाप.

ममजजग (4-9) [मौ जौ गः श्रेयोमाला H. 2. 201] श्रेयोमाला.

ममतनग [ममता नगौ विद्युन्माला Bh. 32. 164] विद्युन्माला.

यमररग (6-7) [यमौ रौ विख्याता चञ्चरीकावली गः Vr. 3. 70. 11] चञ्चरीकावली, चन्द्रिका, चन्द्रिणी, मञ्जरीकावली.

ययययग [इदं कन्दुकं यत्र येभ्यश्चतुर्भ्यो गः P. 7. 1. 2] कन्दुक.

ययययल [यचतुष्कात् लः कन्दः Pp. 2. 145] कन्द.

सजसजग (5-8) [सजसा जगाविति जयाऽथ नन्दिनी Jk. 2. 159] कनकप्रभा, जया, नन्दिनी, प्रबोधिता, मञ्जुभाषिणी, मनोवती, विलम्बिता, सुनन्दिनी, सुमङ्गली.

सजसमग [सुनन्दिनी सजसा मगौ ग० पु० 1. 209. 21] सुनन्दिनी.

सजससग [कुटजं वदन्ति कवयः सजसस्गैः Jk. 2. 152] कलहंस, कुटज, नन्दिनी, नवनन्दिनी, भ्रमरी, सिंहनाद, सुमङ्गलिका.

सनसतग [सनसा तगौ बुद्बुदकम् Bh. 32. 310] बुद्बुदक.

सभनसग (4-9) [चतुर्भिर्नवभिश्छिन्ना रतिः सभनसा गुरुः Mm. 17. 26] रति.

सयसजग [मणिकुण्डलं स्यौ सजगान्वितौ यदा Jk. 2. 158] मणिकुण्डल, सुदन्त.

सससमग [इह तारकमाह चतुःसचितं गम् Pp. 2. 143] [or यदि तोटकवृत्तपदे गुरुको भवतीह तदा किल तारकवृत्तम्; वाणीभूषण 2. 151] तारक.

14 शक्वरी (44)

जभनयगग (4-10) [युगादिभिः कुटिलमिति मतं ज्भौ न्यौ गौ Vr. 3. 77. 1] कुटिल.

जसरनगग (7-7) [ज्सौ नौं गौ राजरमणीयम् H. 2. 229] राजरमणीय.

तभजजगग (8-6) [प्राहुर्वसन्ततिलकां तभजा जगौ गः Jk. 2. 169] इन्दुमुखी, उद्धर्षिणी, कर्णोत्पला, मधुमाधवी, शोभावती, वसन्ततिलका, सिंहोद्धता, सिंहोन्नता.

तयसभगग (6-8) [कलहंसी तयसभाः गौ यती रससिद्धिभिः Mm. 18. 2] कलहंसी.

नजभजगग (8-6) [नजभजगैर्गुरुश्च वसुषट् कुमारी Vr. 3. 77. 3] कुमारी.

नजभजलग [नजभजला गुरुश्च भवति प्रमदा Chm. 2. 124] धृति, प्रमदा, मणिकण्टक.

ननतजगग (7-7) [ननतजगुरुगैः सप्तयतिर्नदी स्यात् Vr. 3. 77. 2] नदी.

ननततगग (7-7) [स्वरभिदि यदि नौ तौ च नान्दीमुखी गौ Chm. 2. 117] नान्दीमुखी, वसन्त.

नननगग (8-6) [त्रिननगगिति वसुयति सुपवित्रम् Vr. 3. 77. 5] उपचित्र, सुपवित्र.

ननभनलग (7-7) [ननभनलगिति प्रहरणकलिता Vr. 3. 73] प्रहरणकलिका–ता.

ननमयलग (7-7) [नौ म्यौ ल्गौ करिमकरभुजा H. 2. 223] करिमकरभुजा.

ननरसलग (7-7) [ननरसलघुगैः स्वरैरपराजिता Vr. 3. 72] अपराजिता.

ननससगग [ननसाः सगगा विभ्रमा Bh. 32. 168] विभ्रमा.

नभनतगग [न्भन्ता गौ शरभललितम् H. 2. 239] शरभललित.

नभनतगग (4-6-4) [तत् (न्भन्ता गौ) शरभा घचैः (चतुर्भिः-षड्भिः) H. 2. 240] शरभा.

नमरसलग (7-7) [नम्रसल्गाः सिंहः H. 2. 228] सिंह.

नरनरलग [नरनरैर्लगौ च रचितं सुकेसरम् Vr. 3. 77. 6] सुकेसर.

भजसनगग [इन्दुवदना भजसनैः सगुरुयुग्मैः Chm. 2. 118] इन्दुवदना, कान्ता, महिता, वनमयूर, वरसुन्दरी, विलासिनी, स्खलित.

भजसनलग [भजसनात् ल्गौ चेदिन्दुवदना H. 2. 238] इन्दुवदना.

भनननलग [चक्रपदमिह भनननलगुरुभिः P. 7. 5. 17] चक्रपद.

भभरसलग [दर्दुरकं भगणद्वयेन रसौ लगौ Jk. 2. 178] दर्दुरक.

भसततगग [भाद्भवति हि लक्ष्मीः सात् ततौ गौ च रुद्रा Jk. 2. 168] रुद्रा, लक्ष्मी.

मतनमगग [मात्तो नो मो गौ यदि गदिता वासन्तीयम् Chm. 2. 115] वासन्ती.

मतनसगग (5-9) [असम्बाधा म्तौ न्सौ गाविन्द्रियनवकौ P. 7. 5] असम्बाधा.

मतयनलग [मतयना लगौ वदन्ति भूतलतन्वीम् Bh. 32. 166] भूतलतन्वी, कुसुमवती.

मतयसगग (4-10) [वेदैर्दिग्भिर्मात्तयसा गोवृष उक्तो गौ; अ० वृ० र०] गोवृष.

मभनमगग (4-10) [मध्यक्षामा युगदशविरामा म्भौ न्मौ गौ P. 7. 5. 2] मध्यक्षामा, हंसश्येनी.

मभनयगग (4-6-4) [मो भो न्यौ गौ यदि कुटिलकमुक्तं वृत्तम्; अ० वृ० र०; वेदरससमुद्राः P. 8. 10] कुटिला, कुटिल, कुटिलक.

मभनयगग (4-10) [हंसश्यामा मभनयगगभाक् खं चाब्धौ Jk. 2. 167] हंसश्यामा, हंसश्येनी, मध्यक्षामा.

मभनयलग [म्भौ न्यौ लगौ चेदिह भवति च चन्द्रौरसः P. 7. 5. 14] चन्द्रौरस.

मरततगग (7-7) शक्वर्यां म्रौ च तौ गौ चन्द्रशालाऽद्रियत्याम् Jk. 2. 166] चन्द्रशाला, लक्ष्मी.